Public Expenditure Effect on Distribution

सार्वजनिक व्यय का वितरण पर भी प्रभाव पड़ता है। वितरण से तात्पर्य होता है बाँटना, जो सभी को समान रूप से मिले। अत: सरकारी खर्च के द्वारा सरकार देश में समानता लाती है और असमानता को दूर करती है। असमानता को दूर करने के लिए सरकार के पास दो साधन होते हैं आय और व्यय।

आय साधन के द्वारा सरकार धनी वर्ग के ऊपर प्रगतिशील कर लगाकर उनकी क्रयशक्ति को कम कर देती है जिससे धनी वर्ग की फिजूलखर्ची में कमी आ जाती है।

व्यय साधन से सरकार निर्धनों के आर्थिक स्तर को ऊँचा करने का प्रयत्न करती है। यह व्यय प्रत्यक्ष या परोक्ष दोनों ही रूपों में निर्धनों को सहायता पहुँचाता है। इस प्रकार सरकार की आय एवं व्यय सम्बन्धी दोनों क्रियाएँ एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित है।

अर्थशास्त्रियों के अनुसार सार्वजनिक व्यय तीन प्रकार का हो सकता है-

(a) Regresive expenditure

प्रतिगामी व्यय

प्रतिगामी व्यय वह व्यय है जो व्यय करने पर कम आय वालों को कम लाभ और अधिक आय वालों को अधिक लाभ मिलता है अत: प्रतिगामी व्यय वितरण की असमानता को बढ़ा देता है।

Scanned with CamScanner

(b) Proportional Expenditure
आनुपातिक व्यय

आनुपातिक व्यय आनुपात की मात्रा में लाभ देता है इससे आय वितरण की असमानता घटती है।

(c) Progressive Expenditure
प्रगतिशील व्यय

प्रगतिशील व्यय से वितरण की असमानता दूर हो जाती है इस व्यय से निर्धनों को धनियों की अपेक्षा अधिक लाभ मिलता है। ज्यों ज्यों आय का स्तर बढ़ता है त्यों त्यों सार्वजनिक व्यय का लाभ घटेगा। अतः प्रगतिशील व्यय आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए सर्वोत्तम व्यय है।

इसके अतिरिक्त अनुदानों के द्वारा भी असमानता दूर किया जा सकता है। अनुदान देते समय सरकार को विशेष रूप से यह ध्यान देना होगा कि अनुदान की राशि का वितरण योग्यतानुसार हो। ताकि लोग अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सके।

कभी कभी सार्वजनिक व्यय से आय की असमानता बढ़ सकती है। युद्ध के समय जो व्यय होता है उस व्यय की पूर्ति धनिकों से ऋण लेकर की जाती है इन ऋणों पर सरकार ब्याज देती है और ब्याज के भुगतान के लिए सरकार को कर लगाने होते हैं जिनका भार निर्धनों पर भी पड़ेगा और धनी वर्ग लाभान्वित होगा। इससे वितरण की असमानता बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त जिन देशों में अप्रत्यक्ष करों की संरचना अधिक होती है वहाँ वितरण की असमानता अधिक और जहाँ प्रत्यक्ष

करों की संख्या अधिक होती है वहां वितरण की असमानता कम होती है।

लुटज (Lutz) के अनुसार वितरण की असमानताएं सदैव देश के हित में नहीं हो सकती। क्योंकि ऐसा होने से पूंजी के संचय में कमी आ जायेगी। कारण यह है कि धनिकों से आय का हस्तान्तरण निर्धनों की ओर होगा जिससे धनिकों के पास पूंजी की कमी और निर्धन अपनी आय का सदुपयोग नहीं कर पायेंगे। इससे देश के उत्पादन और आर्थिक स्तर में गिरावट आने लगेगी। परन्तु लुटस के ये विचार न्यायसंगत नहीं थे क्योंकि मानव-पूंजी के विकास पर किया जाने वाला कोई भी व्यय अनुत्पादक व आर्थिक विकास को अवरुद्ध करने वाला नहीं हो सकता है।

अन्त में हम Keyns के विचार से सहमत हैं कि निर्धनों में धनिकों की अपेक्षा उपभोग की प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि धनी व्यक्तियों पर कर लगाकर उस धन को निर्धनों पर खर्च किया जाता है तो व्यय किये हुए कुल धन की मात्रा में वृद्धि होती है और देश में कुल रोजगार तथा उत्पादन बढ़ जाता है।

—x—

Dr Sandhya Rai